कहुँ देखे आली, ललित त्रिभंगी लाल ।
जेहि सिर सोहति मोर चंद्रिका, लोचन कमल विशाल ।
भृकुटि कुटिल कनक श्रुति कुंडल, मृगमद तिलक सुभाल ।
उर फहरत पट पीत मनोहर, गल विलसत वनमाल ।
युगल पाणि मणिमय कंकण कटि, किंकिणि शब्द रसाल ।
झूमत चलत बजत पग पायल, लजवत राजमराल ।।

भावार्थ-

एक सखि अपनी अन्तरंग सखि से कहती है कि अरी सखि ! क्या तूने कहीं ग्रीवा, कमर एवं पैर से टेढ़े श्यामसुन्दर को देखा है ? जिनके सिर पर मोत के पंखों का मुकुट शोभित हो रहा है एवं जिनके नेत्र कमल के समान बड़े-बड़े हैं । जिनकी भौंहे टेढ़ी हैं एवं कानों में स्वर्ण के कुंडल तथा ललाट में कस्तूरी का तिलक शोभायमान हो रहा है । जिनके वक्ष:स्थल पर पीताम्बर लहरा रहा है तथा गले में सुन्दर वनमाला लटक रही है । जिनके दोनों हाथों में मणियों से जटित कंक्ण हैं तथा कमर में किंकिणी की मधुरध्वनि हो रही है । जिनके चरणों में नूपुर सुशोभित हैं तथा जो झूमती हुई चाल से राजहंस को भी लज्जित करते हैं । जो किंचित् मुस्कराकर मधुर मुरली को बजाते हुए समस्त ब्रज गोपांगनाओं को मोहित करते हैं । 'कृपालु' कहते हैं कि वे ही हमारे प्राणेश्वर प्रियतम हैं जिन्हें लोग नंदनंदन एवं गोपाल भी कहते हैं ।

© 2008 जगद्गुरु कृपालु परिशत्